# University in News on 05 September 2020

**AMAR UJALA MY CITY PAGE 5 & 6**

## लविवि : जल्द शुरू होंगे फॉर्मेसी पाठ्यक्रम

सचिन त्रिपाठी

**लखनऊ।** लखनऊ विश्वविद्यालय सामान्य और इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के बाद अब फॉर्मेसी के क्षेत्र में भी अपनी धाक जमाने को तैयार है। फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) द्वारा नई मान्यता पर रोक लगी होने के बावजूद लविवि में फॉर्मेसी पाठ्यक्रम शुरू होने का रास्ता साफ हो गया है। लविवि ने पाठ्यक्रम शुरू करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। अगले सत्र से इसका संचालन शुरू हो जाएगा।

लखनऊ विश्वविद्यालय ने मेडिकल के क्षेत्र में कॅरियर की संभावनाओं को देखते अपने यहां फार्मेसी पाठ्यक्रम शुरू करने की घोषणा की है। फार्मेसी क्षेत्र में बढ़ती मांग ने विद्यार्थियों में इस क्षेत्र में दिलचस्पी पैदा की है। इसकी वजह से तेजी से निजी कॉलेज खुल रहे थे। इनकी संख्या बहुत ज्यादा होने की वजह से फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआइ) ने पांच साल के लिए नए बैचलर ऑफ फार्मेसी (बीफार्मा) और डिप्लोमा इन फार्मेसी (डी-फार्मा) कोर्स की मान्यता पर रोक लगा रखी है। इसको लेकर लखनऊ विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय को पत्र लिखा था। मंत्रालय की ओर से पत्र के जवाब में कहा गया है कि यह रोक सिर्फ निजी कॉलेजों के लिए है। लखनऊ विश्वविद्यालय सरकारी संस्थान है इसलिए वह अपने यहां यह पाठ्यक्रम खोल सकता है।

पत्र के जवाब से उत्साहित लविवि ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है। लखनऊ विश्वविद्यालय में पिछले कुलपति प्रो. एसपी सिंह ने इंजीनियरिंग संकाय की शुरुआत की थी। इसके बाद अब धीरे-धीरे मेडिकल की तरफ कदम बढ़ा रहा है। इस समय यूनानी और आयुर्वेद महाविद्यालय भी सहयुक्त हैं, पर इनके पाठ्यक्रम का संचालन परिसर में नहीं होता है।

### परफॉर्मिंग आर्ट की कक्षाएं भी शुरू करने की तैयारी

लखनऊ विश्वविद्यालय में शिल्पकला संकाय के अंतर्गत विजुअल आर्ट यानी चित्रकला, मूर्तिकला आदि की कक्षाएं संचालित हैं। लविवि अपने यहां परफार्मिंग आर्ट के कोर्स जैसे नृत्य और गायन की कक्षाएं संचालित करने की तैयारी कर रहा है। लखनऊ में इस समय भातखंडे संगीत सम संस्थान में ये पाठ्यक्रम संचालित हैं। लविवि अगर इनकी कक्षाएं शुरू करता है तो एक नया केंद्र विकसित होगा।

" लखनऊ विश्वविद्यालय अपने यहां फॉर्मेसी पाठ्यक्रम शुरू करने की तैयारी कर रहा है। इससे इस क्षेत्र में गुणवत्ता परक डिग्रीधारकों की कमी दूर की जा सकेगी। पाठ्यक्रम पर लगी रोक को देखते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय को पत्र लिखा गया था, जिसके जवाब में हमें यह बताया गया है कि सरकारी संस्थान होने की वजह से लविवि में इसके संचालन पर कोई रोक नहीं है।

– प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति लविवि

### भाषाविदों और लोकगीतों पर काम कर रहे प्रो. योगेंद्र

लखनऊ विश्वविद्यालय में हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग के अध्यक्ष प्रो. योगेंद्र सिंह ने हिंदी भाषाविदों को लेकर लेखन में बड़ा काम किया है। साथ ही वे दस हिंदी भाषी प्रदेशों के लोकगीतों के संकलन पर भी काम कर रहे हैं। प्रो. योगेंद्र के संरक्षण में 30 से ज्यादा विद्यार्थी शोध कर चुके हैं। बहुत से छात्र नेट-जेआरएफ में सफल हुए तो सैकड़ों छात्र हिंदी विषय से पढ़ाई कर अच्छे पदों पर आसीन हैं। इनमें प्रशासनिक सेवा से लेकर अन्य विभागों के अधिकारी शामिल हैं।

### वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की स्थिति सुखद

प्रो. योगेंद्र सिंह मानते हैं कि शिक्षा का चाहे जितना अंग्रेजीकरण हो गया हो लेकिन वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की स्थिति बहुत सुखद है। पूरे विश्व में हिंदी और हिंदी साहित्य में बहुत काम हो रहा है। प्राइमरी से लेकर विवि स्तर तक और प्रशासनिक व अन्य विभागों में हिंदी रोजगार की भाषा बन रही है। अब तो हिंदी में नए-नए शोध कार्य हो रहे हैं। प्रो. योगेंद्र कहते हैं कि पूरे भारत को एकीकृत करने के लिए मातृभाषा हिंदी बहुत जरूरी है। जहां तक बच्चों का प्रश्न है तो हिंदी में कम अंक आने वाले छात्र और उनके अभिभावक इसे मातृभाषा मानकर हिंदी विषय पर कम ध्यान देते हैं जबकि गणित व अन्य विषयों के ट्यूशन लगाते हैं। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति से मातृभाषा के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी।

**HINDUSTAN PAGE 1 & 5**

## लविवि को पहचान दिलाने वाले गुरुजनों को शताब्दी सम्मान

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ विश्वविद्यालय की पहचान आज दुनिया में है। 100 साल के सफर में कई ऐसे शिक्षक यहां आए जिन्होंने इसे हर बार एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। विश्वविद्यालय प्रशासन अपने शताब्दी वर्ष में इस साल ऐसे सभी पुराने शिक्षकों को याद करते हुए उन्होंने एक अमिट पहचान देने जा रहा है।

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि शताब्दी वर्ष समारोह में ऐसे पुराने शिक्षकों को आमंत्रित करके सम्मानित किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के इन अनमोल रत्नों में प्रो. राधा कमल मुखर्जी, प्रो. राधा कुमुद मुखर्जी, प्रो. केए सुब्रह्मण्यम अय्यर, प्रो. धीरेंद्र नाथ मजूमदार, प्रो.डीपी मुखर्जी सहित कई वरिष्ठ शिक्षकों के नाम शामिल हैं।

**प्रो. राधा कमल मुखर्जी के सिद्धांत अब सिलेबस में:** साल 1921 में एलयू की स्थापना के समय अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र का विभागाध्यक्ष बनाया गया। पहले वह कलकत्ता यूनिवर्सिटी में प्रफेसर थे। यूपी में सबसे पहले उन्होंने ही लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की। वे यूपी में समाजशास्त्र के प्रेरणा के रूप में भी जाना जाता है।

प्रो. डीआर साहू बताते हैं कि बीते वर्ष प्रो. राधा कमल मुखर्जी के सिद्धांतों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नेट के सिलेबस में शामिल किया है।

### प्रो.धीरेंद्र नाथ ने एंथ्रो को अलग पहचान दिलाई

1924 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से एमए करने के बाद धीरेंद्र नाथ मजूमदार ने 1928 में लखनऊ विवि के अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र विभाग में शिक्षक नियुक्त हुए। 1945 में उन्होंने एथिनोग्राफिक एंड फोक कल्चर सोसायटी गठित की, इसमें रिसर्च प्रॉजेक्ट पर काफी काम हुआ। 1950 में प्रोफेसर बनने पर 1951 में उनकी अध्यक्षता में एंथ्रोपॉलजी विभाग बना। तब सिर्फ बीए में यह विषय पढ़ाया जाता था। बाद में, बीएससी में भी इसकी शुरुआत हुई।

### प्रो. केए अय्यर रहे संस्कृत विभाग के संस्थापक

प्रो. केए सुब्रह्मण्यम अय्यर वर्ष 1921 में विश्वविद्यालय से जुड़े। उन्होंने संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग का संस्थापक कहा जाता है। वर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो. बृजेश कुमार शुक्ल बताते हैं कि वर्ष 1957 तक विभागाध्यक्ष की जिम्मेदारी संभालने वाले प्रो. अय्यर यहां के कुलपति भी रहे। उन्होंने भर्तृहरि के वाक्य-प्रदीय व्याकरण दर्शन पर किताब लिखी। विभाग को बढ़ाने में काफी अहम भूमिका निभाई। वह संस्कृत के साथ जर्मन, अंग्रेजी सहित कई विषयों के विद्वान थे। आज भी टैगोर लाइब्रेरी में उनकी किताबों को छात्र पढ़ते हैं।

## बीएड प्रवेश परीक्षा के नतीजे आज आएंगे

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश बीएड संयुक्त प्रवेश परीक्षा 2020-22 के नतीजे शनिवार को जारी किए जाएंगे। नतीजे लखनऊ विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.lkouniv.ac.in** पर जाकर देखे जा सकेंगे।

## एलयू: यूट्यूब पर पढ़ाई

लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने कोरोना काल में एक नया कीर्तिमान रचा। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के प्रयासों का नतीजा है कि पहले लॉकडाउन में ही विवि के सभी विभागों की क्लासरूम ऑनलाइन हो गई। सभी के यूट्यूब चैनल बनकर तैयार हो गए। इतना ही नहीं, स्टडी मैटीरियल और नोट्स तक तैयार करके ऑपलोड कर दिए गए। शिक्षकों की मेहनत का नतीजा है कि आज पूरे विश्वविद्यालय के हर विभाग में ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है।

## 62 की उम्र में हाईटेक हुए गुरुजी



डॉ. नीरज जैन की उम्र 62 साल। अनुभव करीब 40 साल का। कोरोना काल में सब कुछ बदला। तो डॉ. नीरज जैन ने अपने पढ़ाने का तरीका भी बदल लिया। मार्च से पहले तक भले ही वह स्मार्ट फोन चलाना नहीं जानते थे, लेकिन आज वह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से पूरी-पूरी क्लास पढ़ा रहे हैं। डॉ. नीरज बताते हैं कि वह हमेशा से ही मोबाइल फोन जैसी चीजों के इस्तेमाल के पक्ष में नहीं रहे। एक पुराने कीपैड वाले मोबाइल से ही अपना काम चलाया। जब ऑनलाइन क्लासेस की बात आई तो उन्हें 24 घंटे में मोबाइल चलाना सीखा।

**NBT PAGE 6**

## सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी है शिक्षा की 'दीक्षा'

### विकासनगर से एलयू पैदल पढ़ाने जाते हैं

एलयू के केमिस्ट्री विभाग के प्रो. वीके पांडेय साल 1975 में लेक्चरर के पद पर आए थे। उन्होंने अपने करियर में 70 स्टूडेंट्स को पीएचडी करवाया है। साथ ही लगभग 300 रिसर्च पेपर पब्लिश करवाए हैं। रिटायरमेंट के बाद भी एलयू में गेस्ट लेक्चर लेने जाते हैं। वह विकासनगर स्थित अपने घर से एलयू पैदल ही जाते हैं। हालांकि, टेक्नॉलजी की ज्यादा समझ न होने के कारण कोविड-19 के दौर में ऑनलाइन क्लास नहीं ले पा रहे हैं।



### फ्री पीरियड में अटेंड करते हैं पाल सर की क्लास

एलयू के आधुनिक भारतीय भाषा विभाग के पूर्व शिक्षक प्रो. परशुराम पाल रिटायरमेंट के बाद से विभाग में ही गेस्ट लेक्चरर के तौर पर कक्षाएं ले रहे हैं। स्टूडेंट्स ने बताया कि जब क्लास में हमारे शिक्षक नहीं होते तो हम लोग पाल सर की क्लास अटेंड करने बैठ जाते हैं। वे हमसे नहीं पूछते कि आप कौन हैं। प्रो. पाल का कहना है कि शिक्षा हर किसी के लिए है। उनके पढ़ाए स्टूडेंट्स मंत्री, सांसद और एमएलसी भी रहे हैं।



### क्लास अटेंड करने को आतुर रहते हैं विद्यार्थी

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के शिक्षक और विभागाध्यक्ष रहे प्रो. शैलेंद्र नाथ कपूर रिटायरमेंट के बाद भी बच्चों को क्लास दे रहे हैं। स्टूडेंट्स का कहना है कि प्रो. शैलेंद्र सर की क्लास बेहद रोचक होती है। वह विषय को जीवन से जोड़कर पढ़ाते हैं। यहां तक कि जो स्टूडेंट आर्थिक रूप से कमजोर है उसकी फीस भरने में भी मदद करते हैं।



**JAGRAN CITY PAGE I**

## बीएड प्रवेश परीक्षा का परिणाम आज

उत्तर प्रदेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड-2020 का परिणाम पांच सितंबर को घोषित होगा। यह जानकारी लविवि के कुलपति और प्रवेश परीक्षा के चेयरमैन प्रो. आलोक कुमार राय ने शुक्रवार को दी। उन्होंने बताया कि अभ्यर्थी शनिवार को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर परिणाम देख सकते हैं।

राज्य समन्वयक प्रो.अमिता वाजपेयी ने बताया कि अभ्यर्थियों को काउंसिलिंग प्रक्रिया की जानकारी जल्द दी जाएगी। संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड- 2020 का आयोजन 9 अगस्त को प्रदेश के 73 जिलों के 1089 केंद्रों पर कराया गया था। परीक्षा में करीब 43,1904 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था, जिसमें 357696 शामिल हुए थे। शनिवार को विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.lkouniv.ac.in पर रिजल्ट अपलोड कर दिया जाएगा। अभ्यर्थी वेबसाइट पर प्रवेश परीक्षा का परिणाम देख सकेंगे।

## गुरु ने किया व्यक्तित्व व विचार निर्माण

व्यक्ति के निर्माण में शिक्षक का सर्वाधिक योगदान होता है। मेरे छात्र जीवन में भी मेरे शिक्षकों का अप्रतिम योगदान रहा, जिन्होंने मेरे ज्ञान, व्यक्तित्व व विचार निर्माण में महती भूमिका निभाई। मेरे आदर्श बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रबन्ध शास्त्र संकाय के प्रो. हरिश्चन्द्र चौधरी हैं। प्रो. हरिश्चन्द्र का शिक्षक के रूप में मेरे जीवन निर्माण में अमिट योगदान रहा है। छात्रों का उनके मौलिक विचार से साक्षात्कार, कक्षा के गंभीर माहौल को छात्रों की सहभागिता से सहज, किताबी ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान से संयोजन का बोध, मुझमें उनका छात्र होने की वजह से ही आया। मैंने हमेशा उनके दिखाए मार्ग का ही अनुसरण किया है। उन्होंने मुझे हमेशा जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आज मैं जो कुछ भी हूं, उनके सत्कर्म के रास्ते पर चल कर हूं।



– **प्रो. आलोक कुमार राय,** कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय

**VOICE OF LUCKNOW PAGE 3**

## आज जारी होगा बीएड प्रवेश परीक्षा का परिणाम

लखनऊ। उत्तर प्रदेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड का परिणाम पांच सितम्बर को घोषित किया जा रहा है। इसकी जानकारी देते हुए लविवि के कुलपति और उत्तर प्रदेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड-2020-22 के चेयरमैन ने शुक्रवार को बताया कि परीक्षाफल घोषित करने की सारी तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड 2020-22 की प्रवेश परीक्षा नौ अगस्त को प्रदेश के 73 जिलों के 1089 केंद्रों में संपन्न हुयी थी, जिसमें 4,31,904 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था और 3,57,696 अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल हुए थे। परिणाम घोषित होने के बाद सभी अभ्यर्थी अपना प्राप्तांक, स्टेट रैंक, कैटेगरी रैंक लविवि की वेबसाइट पर लॉगिन करके देख सकते है।

**i-NEXT PAGE 5**

## बीएड प्रवेश परीक्षा का परिणाम आज

**LUCKNOW:** उत्तर प्रदेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड-2020 का परिणाम पांच सितंबर को घोषित होगा. यह जानकारी लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति और प्रवेश परीक्षा के चेयरमैन प्रो. आलोक कुमार राय ने शुक्रवार को दी. उन्होंने बताया कि अभ्यर्थी शनिवार को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर परिणाम देख सकते हैं. संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड- 2020 का आयोजन 9 अगस्त को प्रदेश के 73 जिलों के 1089 केंद्रों पर कराया गया था. परीक्षा मे करीब 43,1904 अभ्यर्थियो ने आवेदन किया था, जिसमे 357696 शामिल हुए थे. शनिवार को विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.lkouniv.ac.in** पर रिजल्ट अपलोड कर दिया जाएगा. अभ्यर्थी वेबसाइट पर जाकर प्रवेश परीक्षा का परिणाम देख सकेंगे.